LIBRARY

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE, BHOPAL

S.No.-3 (JANUARY 2024)

दैनिक भास्कर (सिटी भास्कर) Page – 02 19/01/2024

एसपीए में भोज वेटलैंड और भोपाल सिटी पर बात... एक्सपर्ट्स ने दिए अपने-अपने सुझाव

वेटलैंड के लिए बड़े तालाब से जुड़े नदी-नाले सुरक्षित करें

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

भोपाल का तालाब दुनिया के नक्शे पर शहर को एक अलग पहचान दिलाता है। इतने बड़ा मैन मेड तालाब होना आम बात नहीं है। ऐसे में हमें अपने तालाब और इसके कारण बने वेटलैंड को संरक्षित रखने की जरूरत है। लेकिन, ताली सिर्फ एक हाथ से नहीं बजती। सभी को साथ मिलकर काम करना होगा। तालाब के आसपास के एरिया में रह रहे लोगों को ज्यादा सजग होना होगा। इसके साथ ही वेटलैंड से जुड़े 11 अलग-अलग विभागों को भी ज्वाइंट्स एफर्ट करने होंगे, तब ही शहर के भीतर की वॉटर बॉडीज को बचाया जा सकेगा।

कार्यक्रम में मौजूद पार्टिसिपेंट्स

बड़े तालाब के आसपास सेटलमेंट्स में आए बदलाव को दिखाया

यह बात सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल एंड प्लानिंग टेक्नोलॉजी (सेप्ट) यूनिवर्सिटी अहमदाबाद से आए एक्सपर्ट प्रोफेसर सास्वत बंदोपाध्याय ने कही। वे भोज वेटलैंड और भोपाल सिटी पर बात कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने 1851 से 2014 के बीच बड़े तालाब के आसपास किस तरह से सेटलमेंट्स में बदलाव आया, इसका गूगलमैप प्रोजेक्शन दिखाया।

बफर एरिया से बाहर करें खेती

कैचमेंट एरिया के पास बसे ग्रामीणों को भी जागरूक करें

स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर (एसपीए) भोपाल के डायरेक्टर डॉ. कैलाश राव एम ने वेलकम एड्रेस दिया। वहीं, एनवायरनमेंटल प्लानर लोकेन्द्र ठक्कार ने बताया- हमारा बड़ा तालाब बहुत सारे छोटे-छोटे स्रोतों से मिलकर बना है। कोलांस जैसी कई नदियां हैं, जो तालाब में पानी को बनाए रखने में मदद करती हैं। हमें इन नदियों की सेहत पर ध्यान देना होगा। शहरों में नाले इसमें मिलने से तो रोकने ही होंगे, कैचमेंट एरिया के पास बसे ग्रामीणों को भी जागरूक करना होगा। उन्हें बताना होगा कि वे बफर एरिया से बाहर खेती करें।